गोस्वामी तुलसी दास जी और नारी जाति का अपमान

डा॰ राम कृष्ण गुप्ता, एडमण्टन।

आधुनिक शिक्षित महिला समाज को गो॰ तुलसी दास जी की निम्न चौपाई में नारी विरोधी मनोवृत्ति का आभास होता है -

ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।

आलोचक उन्हें स्त्री समाज की ओर हीन भावना रखने वाला "मेल शाविनिष्ट पिग" तक की संज्ञा देते हैं। इस आलोचना से कई बार पुरूष भी सहमत हो जाते हैं। क्या यह आलोचना उचित और तर्कसंगत है?

मैं उक्त आलोचना से पूर्णतया असहमत हूं। मेरे अनुमान में इस चौपाई का अर्थ गलत लगाया जाता है। यदि तुलसीदास जी को नारी विरोधी माना जाय तो उन्हें पशु विरोधी और शूद्र विरोधी भी मानना पड़ेगा। इस चौपाई के अनुसार ये तीनों ही ताड़ना के अधिकारी थे। ढोल का तो निर्माण ही पीटने के लिए किया जाता है। बचा शब्द गंवार - यह चौपाई में संज्ञा है या विशेषण? मेरे विचार से यह विशेषण है, इसीलिए ढोल शब्द के बाद परन्तु तीनों जीवित वर्गों के पहले प्रयोग किया गया है। यदि गंवार शब्द को विशेषण मान लिया जाय तो इस चौपाई का अर्थ हो जाता है कि गंवार शूद्र, गंवार पशु और गंवार नारी ताड़ना के अधिकारी हैं। यदि इसे संज्ञा माना जाय तो प्रश्न उठता है कि गंवार किस समुदाय का द्योतक है?

तुलसी दास जी के लिए तो सारा संसार ही "सीय राम मय" था और उन्होंने दोनों हाथ जोड़ कर उसको प्रणाम किया है। तो क्या वो किसी भी वर्ग या समुदाय के विरूद्ध हो सकते थे? नहीं, जैसा कि निम्न तथ्यों से स्पष्ट होगा।

शूद्र - भगवान राम गुहराज निषाद को अपना परम मित्र और बंधुवत मानते हैं। उन्होंने शबरी, अधम जाति की वृद्धा, के झूठे बेर आनन्दपूर्वक ऐसे खाये थे जैसे उन्हें षटरस व्यञ्जन मिल गया हो।

पशु - राम चरित मानस की कथा ही काग भुषुण्डि जी ने गरूड़ जी को सुनाई थी। राम चन्द्र जी ने अपने हाथों से गृद्धराज जटायु का अंतिम संस्कार प्रेम पूर्वक किया और उनसे निवेदन किया कि वह सीताहरण का समाचार स्वर्ग में पिता दशरथ जी से न कहें। राम जी की पूरी सेना ही वानरों की थी। हनुमान जी उनके परम प्रिय थे।

नारी - बाली वध का सर्मथन राम जी ने इस आधार पर किया

"अनुज बधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ये चारी।"
"इन्हई कुदृष्टि विलोकई जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई।"

तुलसी दास जी की दृष्टि में पिता से अधिक श्रेष्ठ उस विमाता कैकई का स्थान था जो राम चन्द्र जैसे योग्य राजकुमार को वनवास के लिए भेज रही थी। यह तथ्य तुलसी दास जी ने कौशल्या माता के मुख से इस प्रकार कहलाया है -

"जौं केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।"

स्पष्ट है कि तुलसी दास जी के आलोचकों ने इस चौपाई को सन्दर्भ से निकाल कर निराधार छिछालेदर की है। राम चरित मानस में उक्त चौपाई समुद्र द्वारा क्षमायाचना करते समय कही गई है। समुद्र वास्तव में जड़ है। उसने भगवान राम की विनय प्रार्थना की अवहेलना की और फलस्वरूप जब सुखाया जाने वाला था तब क्षमायाचना के लिये उसने ये वचन कहे। पात्र के अनुसार भाषा का प्रयोग तुलसीदास जी की विशेषता थी।